"मोहन"

1. मोहन घर आवहु - करउ जोदरीआ । मान करउ - अभिमाने बोलउ - भूल चूक तेरी प्रिअ चिरीआ । (1209)

अर्थ:- हे मोहन प्रभु ! मैं मिन्नत करती हूँ मेरे हृदय-घर में आ बस । हे मोहन ! मैं (सदा) मान करती रहती हूँ, मैं सदा अहंकार की बात करती हूँ, मैं बहुत सारी भूलें-चूकें करती हूँ, फिर भी हे प्यारे ! मैं तेरी ही दासी हूँ ।

निकट सुनउ अर पेखउ नाही - भरम-भरम दुख भरीआ । होइ क्रिपाल गुर लाह पारदो - मिलउ लाल मन हरीआ ।

अर्थः- हे मोहन ! मैं सुनती हूँ (तू) नजदीक (बसता है), पर मैं तुझे देख नहीं सकती । सदा भटक-भटक के मैं दुखों में फसी रहती हूँ । हे गुरु ! अगर तू दयावान हो के, मेरे अंदर से माया के मोह का पर्दा दूर कर दे, मैं (सुंदर) लाल (प्रभु) को मिल जाऊँ, और, मेरा मन (आत्मिक जीवन से) हरा-भरा हो जाए ।

एक निमख जे बिसरे सुआमी - जानउ कोट दिनस लख बरीआ । साधसंगत की भीर जउ पाई - तउ नानक हरि संग मिरीआ ।

अर्थः- हे भाई ! अगर आँख झपकने जितने समय के लिए भी मालिक-प्रभु (मन से) भूल जाए, तो मैं ऐसे समझती हूँ कि करोड़ों दिन लाखों वर्ष गुजर गए हैं । हे नानक ! (कहः) जब मुझे साधु-संगत का समागम प्राप्त हुआ, तब परमात्मा से मेल हो गया ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरु-सतगुरु-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"